“ हम सब भगवान हैं ”

" अध्यात्मशास्त्र "

सबसे पहली बात तो यह है कि ऐसा कॉई भगवान नहीं है जॉ हमारा भला करेगा।

अभी-अभी किसी ने कहा कि भगवान आपका भला करे, वह बिल्कुल गलत है क्योंकि भगवान तो हम खुद ही हैं। कॉई अन्य भगवान है ही नहीं। अध्यात्म शास्त्र ऐसे प्रयॉग पर मनाही चाहता है। मुझे विश्वास है कि सभी इस बात को कभी न कभी समझेंगें। मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। जब सब इस बात को समझेंगे और यह कहना बन्द करेंगे कि " भगवान आपका भला करे"। यह बात तो धर्म कहता है पर हम तो विज्ञान की बात करते है, आध्यात्मिकता या अध्यात्मशास्त्र में पहली बात यह मानना है कि ‘ हम स्व्यं भगवान हैं - ‘अहं ब्रह्मास्मि।’

तो फिर कौन है यहाँ आपको आशीर्वाद देने को? कॉई भी नहीं। हम खुद भगवान हैं। तो फिर अन्य किससे आपकॉ आशीर्वाद लेना है। धर्म और विज्ञान की भाषा भिन्न है। धार्मिक भाषा अलग है और वैज्ञानिक भाषा अलग है। पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटीज मूवमेंट विज्ञान का प्रसार करने के लिए समर्पित है, जो धर्म से एकदम विपरीत बात है। अगर धर्म दक्षिणी ध्रुव है तो विज्ञान उत्तरी ध्रुव। यहाँ सब कुछ धर्म से विपरीत है। धर्म कहता है किसी देवता के समक्ष प्रार्थना करॉ, विज्ञान कहता है कि तुम स्वयं ही भगवान हो। अच्छे भगवान हो, साधारण भगवान हो या फिर बुरे भगवान - यह तो आपके कर्म के अनुसार निर्धारित हॉगा।

" प्रशिक्षित वैज्ञानिक "

यदी आप जानवरॉं को खाते हो तो फिर तो राक्षस-सम भगवान हो, अगर शाकाहारी हो तो अच्छे साधारण भगवान हो, पर अगर आपने ध्यान द्वारा खूद को पहचान लिया है तो महान भगवान हो। हैं सभी भगवान ही। पिरमिड स्पिरिचुअल सोसाइटीज मूवमेंट का जन्म मेरे वैज्ञानिक मन से हुआ है। मैं एक प्रशिक्षित वैज्ञानिक हूँ। जब मैंने सब और आध्यात्मिकता का प्रचार करना शुरू किया, चारों ऑर बेवकूफी छाई हुई थी। मैं सफल रहा हूँ, यदी ऐसा न हॉता तो आज आप यहाँ न बैठे होते।

हमारे शब्द हमारी आत्मा के परिचायक होते हैं जैसे हमारा चेहरा हमारे मन का दर्पण हॉता है। जब आप किसी का चेहरा देखते हैं तो झट से कह सकते हैं कि क्या हुआ तुम्हें? या फिर कह सकते हैं क्या अच्छा हुआ है, जो तुम्हारा चेहरा दमक रहा है। यदी आप अवसाद में हैं तॉ भी चेहरा बता देता है, अगर आप, खुश हैं तो भी चेहरे से पता चल जाता है। चेहरा तो मन का दर्पण होता है, इसी

प्रकार आपके शब्द आपके विकास-स्तर का संकेत देते हैं। अगर आप अब भी यही कह रहे हैं कि भगवान आपका भला करे, तो अर्थ यह हुआ कि अभी आप अध्यात्म शास्त्र तक नहीं पहूँचे हैं। हमें शब्दों के प्रयोग में भी वैज्ञानिक होना होगा। अपनी अभिव्यक्ति में भी वैज्ञानिक बनना होगा। इसी वैज्ञानिक बात को हर जगह कहा गया है।

उदाहरण के लिए, वेदों में कहा गया है - 'अहं ब्रह्मास्मि ', ' तत्वमसि श्वेतकेतु ' अर्थात् मैं भगवान हूँ। तुम भी भगवान हो। यह तो विज्ञान है,धर्म नहीं है। 'कृष्ण एकमात्र भगवान हैं, हम सब उनके सेवक हैं' - यह कहना धर्म है, विज्ञान नहीं है। ' जब तक हम कृष्ण का नाम नहीं लेते, मुक्ति नहीं होगी ' यह सब धर्म है, विज्ञान नहीं। धर्म की क्या स्थिति है, वह तो सम्प्रदाय से जुड़ा हैं। यदी आप हिन्दू हैं तो हिन्दू समाज में ही आपकी कीमत है। यदी मुस्लिम हैं तो उसी समाज में आपकी इज्जत है। हिन्दू की मुस्लिम समाज में और मुस्लिम की हिन्दू समाज में कोई समाज में कोई कीमत नहीं।

हर धर्म अपने को ही महान समझता है और हर भक्त कुएँ के मेढ़क की तरह अपने आपको ही सर्वश्रेष्ट समझता है। सभी धर्म बड़े- बड़े कुएँ हैं और धार्मिक लोग मेंढ़क जैसे हैं, जो कहते रहते हैं- 'भगवान भला करे'।

जो लोग तिरुमला पर्वत चढ़ते हैं, वे भी भगवान हैं और जो कैलास पर्वत पर चढ़कर जाते हैं, वे भी भगवान हैं। अध्यात्म्शास्त्र बहुत कुछ चाहता है, वह चाहता है व्यावहारिक प्रयोग और उसके बाद मन में उठने वाले प्रशनों के उत्तर तथा विचारों की पुष्टि।

चूँकि हम सभी 'अहं ब्रह्मास्मि' हैं, अतः हम उँगलियों की तरह अलग नहीं हैं बल्कि एक ही हैं। उँगलियों की तरह हम अलग नजर आते हैं पर हाथ तो एक ही है- 'अहं ब्रह्मास्मि'।

" वास्तविकता का सृजन "

अध्यात्मशास्त्री होने के नाते हमें यह समझना चाहिए कि हम अपनी वास्तविकता का सृजन स्वयं करते हैं, अपने विचारों, शब्दों तथा कर्मों द्वारा। इन विचारों, शब्दों तथा कर्मों में से भी 'शब्द' बहुत महत्वपूर्ण हैं। जैसा हम सोचते है, वैसे ही होते हैं। जैसा बोलते हैं असल में वैसे ही हम होते हैं। अतः आपको ऐसे आध्यात्मिक सम्मेलनों में वैज्ञानिक भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए।

कहें, हम सब भगवान हैं, कोई अन्य हमें आशीर्वाद देने वाला नहीं है। लोग मेरे पास आते हैं आशीर्वाद लेने। मैं कहता हूँ मेरे पास ऐसा कुछ देने को है ही नहीं। मैं कोई स्वामी नहीं हूँ, मैं तो एक मित्र हूँ। एक मित्र दूसरे को क्या आशीर्वाद दे सकता है, वह तो आपको गले लगा सकता है, आपकी मदद

कर सकता है, आपकॊ प्रॊत्साहित कर सकता है, वह कभी आपकॊ आशीर्वाद नहीं दे सकता।

हम सभी अपने मालिक खुद हैं, अपनी जिंदगी हमने खुद ढूँढी है, माता पिता को हमने खुद चुना है। अपने इस भौतिक शरीर का सृजन हमने किया है। अणु दर अणु, कॊशिका दर कॊशिका हमने अपने विचारॊं, अपनी इच्छाओं तथा अपने लक्ष्यॊं द्वारा अपने शरीर का निर्माण खुद किया है। अपनी जिंदगी का निर्माण हमने खुद किया है, यह किसी ईश्वर के आशीर्वाद से नहीं बनी है, हमारे अन्दर बैठे भगवान ने बनाई है। अगर आप बुरे कर्म करते हैं तो आपका चेहरा विकृत हो जाएगा! अच्छे कर्म करेंगे तो चेहरा चमकेगा क्यॊंकि यह शरीर हमारे कर्मों से बनता है। यह शरीर हमारे कार्मिक इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है। आपका इतिहास लम्बा है, अनेक जन्मॊं से चलकर आता है। मान लीजिए एक भौतिक शरीर कैंसर को लेकर पैदा होता है तो यह उसका कार्मिक इतिहास ही है जो दिखाई दे रहा है। यदी स्वस्थ शरीर है तो भी यह अच्छे कर्मों का प्रभाव है।

आपका भौतिक शरीर आपके कार्मिक इतिहास का प्रतिबिम्ब है। एक बार जन्म हॊने पर हम अपने कर्मॊं, विचारॊं तथा वचनॊं से इस प्रकार अगले जन्म के लिए शरीर तैयार करते हैं जैसे एक - एक ईंट रखकर भवन तैयार हॊता है। यदी ईटें कच्ची रहेंगी तो भवन कभी गिर सकता है।

यदी ईटें पक्की हॊंगी तो भवन स्थिर रहेगा। हम अपनी वास्तविकता का सृजन खुद करते हैं, चाहे वे कैसी भी हॊं। यह विज्ञान कहता है, भगवान कॊई नहीं है जो आपकॊ कुछ देगा। इस धारणा को त्याग दो।

" सब यॊगी बने .. सब शाकाहारी बने "

अध्यात्मशास्त्र तो चाहता है सब यॊगी बनें, सब शाकाहारी बनें। रावण एक बड़ा ध्यानी था पर था वह मांसाहारी। इसलिए मारा गया। आप 99 बातॊं में अच्छे हो सकते हैं पर अगर एक भी चीज़ गलत है तो आपको मरना होगा। आप सूक्ष्म यात्राएँ कर सकते हैं, आपने पिछले जन्म भी शायद देख लिए हों पर अगर आप मांस-मछली खाते हैं तो आप मूर्ख ही हैं, आप अध्यात्मशास्त्री नहीं हैं। आपको बार-बार जन्म लेना पड़ेगा जब तक आपके कर्मों का हिसाब चुकता नहीं हो जाता, जब तक आप शुद्ध शाकाहारी नहीं हॊ जाते। आप किसी अन्य जीव का जीवन कैसे ले सकते हैं? क्या अधिकार है आपके पास? कितनी गलत बात है। कई बड़े मास्टर्स व लेखकॊं को मैंने देखा है जो अध्यात्मशास्त्र पर लिखते तो हैं पर सांस-मछली खाते हैं, पता नहीं क्या खाते हैं वे। बड़ी अजीब बात है।

" सामाजिक दायित्व "

अध्यात्म शास्त्र तो कहता है कि आप ध्यान करें, ध्यान का प्रचार करें और शाकाहार को फैलाएँ। सभी जागृत मास्टर्स को ऐसा करना चाहिए। जैसे ही आपमें जागृति आएगी, आप दूसरों की सेवा करने लगेंगे। ऐसा नहीं हो सकता की सेवा करने लगेंगे। ऐसा नहीं हो सकता कि आप पहाड़ की चोटी पर बैठ जाएँ, अपने उत्तरदायित्वों से मुँह मोड़ लें और खुद को Enlightened master भी कहें। सामाजिक दायित्व तो आवश्यक है ही, चाहे जागृति प्राप्त की हो या नहीं। हमें देखना है कि समस्त पृथ्वी समस्त मानवता जब तक शाकाहारी नहीं बन जाती, जब तक हर एक व्यक्ति योगी नही बऩ जाता, हमें काम करते रहना है। इस वर्तमान समय में पृथ्वी मास्टर्स, योगियों और ऋषियों से भरी है। इस वक्त मानवता पर ऋषिऋण, मास्टर्स का ऋण या योगियों का ऋण नहीं है और न ही सामाजिक दायित्वों को निभाने वाले लोगों की कमी है। अतः हमें आशा है कि जलदी ही पृथ्वी पर भविष्य सुनहरा होगा।